संपादकीय

इक्कीसवीं सदी स्त्रियों की सदी है। हर कहीं स्त्री को प्रथम स्थान दिया जा रहा है। स्त्री सशक्तीकरण सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं का परम लक्ष्य है। इस तरह की कई बातें सालों से हम सुनते आ रहे हैं। लेकिन सच्चाई क्या है? इस पर ध्यान देने की सख्त ज़रूरत भी है। हम स्त्री को समान दर्जा देने को, या उसे मानने को कहाँ तक तैयार हैं? स्त्री-पुरुष का द्वन्द्व एक सच्चाई है, स्त्री-पुरुष का जैविक आकर्षण भी एक सच्चाई है। उक्त जैविक आकर्षण व स्त्री की दैहिक स्थिति का शोषण करने के लिए आधुनिक पुरुष मौके की खोज करता रहता ही है। मनुष्यता, संस्कृति आदि की बातें करते वक्त भी वह मौके की ताक में ही रहता है। बौद्धिक एवं शैक्षिक स्तर पर उन्नत पुरुष क्यों स्त्री को, उसके स्वतंत्र अस्तित्व को, उसकी अस्मिता को, उसकी निजता को नहीं मानता है? भाषण एवं चर्चा के मंचों पर सभ्य पुरुष बहुत कुछ कहता रहता है। कामुकता को छोड़ देने पर भी वही पुरुष अपनी परम्परा प्राप्त सुविधा को तिलांजलि देने को, अपने अहं को छोड़ देने को, आत्मशोध करने को उद्यत नहीं होता है। इस तरह की हिप्पोक्रेसी से आजाद नहीं होते पुरुष के स्वभाव, व्यवहार एवं तेवर से स्त्री पहले से ही वाकिफ तो है, परन्तु अपना विरोध एवं प्रतिरोध दिखाने में असमर्थ रही। शिक्षा, बाहरी संपर्क तथा नवोत्थान जैसे सामाजिक आन्दोलनों के आलोक में स्त्री अपनी त्रासद स्थिति से आजाद होने का स्वप्न देखने लगी और इस स्वप्न की ऊर्जा के रूप में स्त्री साहित्य का आगमन भी हुआ।

स्त्री साहित्य आज कई चरणों को पार करके आगे बढ़ रहा है, ताकतवर हो रहा है। फिर भी स्त्री घर-परिवार में, समाज में, अधिकार के विभिन्न क्षेत्रों में आशाजनक स्थिति तक नहीं पहूँच गयी है। आज साहित्य में स्त्री नहीं, स्त्री का साहित्य ही स्त्री मुक्ति की सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक बातें करने लगा है, गंभीर संवाद भी करने लगा है। इतना कुछ करने व होने पर भी इस उत्तराधुनिक समय में स्त्री शोषण की, उत्पीड़न की, उसकी त्रासद स्थितियों की खबरें काफी मात्रा में समाचार-सुर्खियों में स्थान पकड़ रही हैं। विवाह, परिवार, जाति, धर्म, अनुष्ठान आदि संस्थाएँ आज भी स्त्री शोषण की पहरेदारी करती आ रही हैं। शुचिता एवं निजता का पुराना अभिजात द्वन्द्व बिना किसी खास अंतर के आज भी समाज में विराजमान है। याने व्यक्ति मन तथा समाज मन की संरचना में परिवर्तन नहीं के बराबर ही हुआ है। इसके लिए धर्म एवं उसके दृश्य-अदृश्य बन्धनों को तोड़ना होगा, आर्थिक दृष्टि से स्त्री को मजबूत करना/होना होगा, सुरक्षा एवं सुविधा की चिन्ताओं से मुक्त वातावरण उपलब्ध करना होगा, तलाकशुदे दम्पति के या उसके समान बच्चों को अलग दृष्टि से देखने की आदत से समाज को सुधरना होगा। इस प्रकार धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर समाज को बदलना पड़ेगा, नहीं तो स्त्री मुक्ति संघर्ष सही मायने में अपने मकसद तक नहीं पहूँच पाएगा। इतना होने पर भी स्त्री-पुरुष की जैविक संरचना का अन्तर बरकरार रहेगा ही, मनुष्यता, संस्कृति, बुद्धि एवं विवेक के बल पर पुरुष को भला इनसान होना होगा।

अब स्त्री मुक्ति की बात उच्च शिक्षा के एक कोने में सुरक्षित है! वह भी मानवीकी संकाय में मात्र। यदि अनिवार्य है तो सेक्स एजुकेशन को स्कूली शिक्षा का हिस्सा बनाना है। ऐसा कदम किशोरों की मानसिक गुत्थियों को सुलझाने में सहायक जरूर निकलेगा। उच्च शिक्षा से प्राप्त अवबोध को स्त्री एवं पुरुष आज मौके के अनुसार ही ग्रहण करते आ रहे हैं। मानवाधिकार, स्त्री अधिकार आदि को व्यवहार में लाने के लिए उत्तरदायी शासन नारे के रूप में इसे प्रक्षेपित करके अपने दायित्व से मुँह मोड़ लेता है। कुर्सी की राजनीति का राजनीति समझते (?) राजनीतिक दल स्त्री के रास्ते पर हमेशा आड़े आते हैं। प्रशान, अर्थ, धर्म आदि पर जम गये पुरुष वर्चस्व को तोड़ने की जोखिम उठाने में वर्तमान राजनीतिक दल काबिल नहीं हैं। यह भी सही है कि समाज में काफी परिवर्तन आ गया है। लेकिन स्त्री मुक्ति के क्षेत्र में समाज उतना अग्रसर नहीं हुआ है। स्त्री का मानसिक पिछड़ापन तथा उस पर पड़ी सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक विधि-निषेध का जाल पुरुष वर्चस्ववाले समाज और पूँजीवादी-बाज़ारवादी दुनिया के लिए अनिवार्य है। बाज़ार असल में स्त्रियों एवं बच्चों पर अधिक आश्रित है। बाज़ार के लिए स्त्री मुख्य उपभोक्ता है, और एक वस्तु भी। स्त्री को खुद भी इससे आज़ाद होना चाहिए। सशक्त नारी चिन्तक प्रभा खेतान इससे सही ढ़ंग से अवगत थीं। इसलिए वे स्त्री मुक्ति संघर्ष को *बाज़ार के बीच : बाज़ार के खिलाफ* लड़ने को कहती थीं।

इन मुद्दों से साहित्य मुखाबित होता ही है। लगभग 90 साल के साहित्य पर नजर डालने पर यह बात समझ में आएगी कि स्त्री की हालत में आशाजनक परिवर्तन नहीं हुआ है। प्रेमचन्द के *गोदान* की मालती, गोविन्दी, झुनिया, सरोजा, कल्याणी आदि के साथ नयी सदी के उपन्यासों के पात्रों - अनामिका के *दस द्वारे का पींजरा* की मनोरमा, ठुमरी या मैत्रेयी पुष्पा के *कस्तूरी कुंडल बसै* की मैत्रेयी, कस्तूरी, या क्षमा शर्मा के *मोबाइल* की मधूलिका शुक्ला, फरहत - को रख दें तो यह बात और स्पष्ट हो जाएगी। महादेवी वर्मा की *श्रृंखला की कड़ियाँ* के साथ नई सदी के किसी स्त्री विमर्श संबन्धी पुस्तक को रखकर उन पर नजर डालिए। ये सिर्फ उदाहरण मात्र हैं। कहने का मतलब यह है कि उक्त क्षेत्र का बदलाव काफी मंद गति से हो रहा है, इसलिए स्त्रीवादी साहित्य एवं स्त्रीवादी अन्य बहसों-कार्यक्रमों की सख्त ज़रूरत है। साहित्य के क्षेत्र में भी रचनाकार स्त्री होने के कारण रचना की उपेक्षा एक सच्चाई है। संपादक तथा प्रकाशक से लेकर पाठक एवं आलोचक ही नहीं, बल्कि पुरस्कारदाता भी एक ही सुगम रास्ते के राही हैं। पुरुष लेखक का सनकी होना समाज की नजर में उसकी प्रतिभा का लक्षण है और लेखिका का सनकी होना समाज की दृष्टि में ऐब है।

हमारा विश्वास है कि समाज को स्त्री अनुकूल बनाना असल में समाज को तंदुरुस्त बनाना है। दूसरे शब्दों में कहे तो समाज को प्रकृति की ओर मोड़ना है, जो अधिक मानवीय एवं सस्टाइनबिल भी होगा। ऐसे सांस्कृतिक माहौल में स्त्री मुक्ति को मद्देनजर रखते हुए *जन विकल्प* का नया अंक स्त्रियों की कविताओं पर केन्द्रित रखा गया है। समग्रता के साथ स्त्री कविताओं का इतिहास प्रस्तुत करने का इरादा था, उसमें सफलता असफलता का निर्णय पाठक लेंगे। *हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास* की लेखिका सुमन राजे की कविताओं को समेटने की कोशिश की गयी थी, पर कामयाब नहीं हुए। फिर भी हमारा विश्वास है कि यह प्रयास आगे के प्रस्थान के लिए अवश्य सहायक सिद्ध होगा।

पी. रवि

अनुक्रम

संपादकीय

1.	सुभद्राकुमारी चौहान : एक अनूठा व्यक्तित्व	डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल	09
2.	सुभद्राकुमारी चौहान की काव्य साधना	डॉ. गीता कुञ्ञम्मा. सी	14
3.	भारतीय चिंतन और महादेवी का काव्य	डॉ. प्रमोद कोवप्रत	24
4.	नई कविता और शकुन्त माथुर की कविताएँ	विशाल पांडेय	28
5.	कीर्ति चौधरी की कविता में सृजनात्मक दायित्व की संचेतना	डॉ. मूसा. एम	34
6.	मुक्ति-कामना की लेखिका : प्रभा खेतान	डॉ. के. श्रीलता	44
7.	लाइलाज कहे जाने वाले इलाकों की निशानदेही करती कविताएँ	बलवन्त कौर	50
8.	सविता सिंह : स्वप्न और यथार्थ की कविता	डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	55
9.	स्त्री, परिवार, प्रेम : सुनीता जैन का काव्य-संसार	डॉ. सिन्धु ए.	62
10.	हेक और हूक की कविता	डॉ. के.जी. प्रभाकरन	70
11.	दुर्ग द्वारों के खिलाफ	डॉ. राजेश्वरी के.	77
12.	त्वचा का त्यागपत्र नहीं बेलपत्र हैं कविताएँ	अरुण शीतांश	88
13.	उलटी पड़ी चीज़ों को उलट देने का काम	अच्युतानंद मिश्र	112
14.	अनामिका की कविता में स्त्री संवेदना	डॉ. प्रतिभा मुदलियार	120
15.	दु:समय में हरियाली का सपना बुनते लफ्ज़	हर्षा सत्यन	126
16.	धूप पीने का व्याकरण	रश्मि रावत	130
17.	लड़कियों के अपने देश की कथा सुनी है?	सुजाता	139
18.	अनीता वर्मा की कविता : आत्मराग के विस्तार की कविता	डॉ. के.के. वेलायुधन	148
19.	सुशीला टाकभौरे की कविताओं में इतिहासबोध की झलकियाँ	कण्णन के.यू.	155
20.	आदिवासी, स्त्री अस्मिता की तलाश की कविता	वी.जी. गोपालकृष्णन	161
21.	नीलेश की कविताओं की बहुस्वरता	डॉ. रम्या पी.आर.	171
22.	स्त्री जीवन की अनकही कहानियों से गुज़रती...	डॉ. राधामणि सी.	176
23.	ज्योति चावला की कविताई	डॉ. के. अजिता	182
24.	तितलियों की तिलाँजली : अति-स्त्री होने के...	डॉ. के.एम. जयकृष्णन	202
25.	जसिन्ता केरकेट्टा की कविता	पी. रवि	208
26.	नारीवादी वर्ग-संघर्ष : बेल हुक्स (अनुवाद : प्रोमिला)		223